P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-10* June- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कस्तूरबा गांधी व्यक्तित्व एवं कृतित्व (स्वतंत्रता आन्दोलन एवं भारतीय राजनीति में उनकी भूमिका के विशेष संदर्भ में)

Kasturba Gandhi Personality and Creativity (With Special Reference to the Freedom Movement and their role in Indian Politics)

Paper Submission: 05/06/2021, Date of Acceptance: 17/06/2021, Date of Publication: 19/06/2021

माधुरी गुप्ता
सह आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
एस पी एन के एस राजण् महाविद्यालय,
दौसा, राजस्थान, भारत

सारांश

कस्तूरबा गांधी प्रारंभ में एक साधारण महिला थी और उनके दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह करने के बाद उनका पूरा जीवन ही परिवर्तित हो गया। यहीं से उन्होंने सार्वजनिक जीवन में कार्य करना प्रारंभ और यही सिलसिला उनकी मृत्यु तक चलता रहा। वे निरक्षर थी फिर भी उनमें आधारभूत समझ और कर्मठता कूट कूट कर भरी हुई थी। वे गांधी जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती रही। मोहनदास को गांधी में बदलने में कस्तूरबा का महत्वपूर्ण योगदान रहा। एक ही समय में घर परिवार की जिम्मेदारी निभाई तो दूसरी तरफ सार्वजनिक जीवन में भी अपना श्रेष्ठतम योगदान दिया। इसके अतिरिक्त महिला शिक्षा ,महिला सशक्तिकरण, आदिवासियों का उत्थान और देश की आजादी में पूर्ण योगदान दिया। कई बार गांधी जी के जेल चले जाने के बाद उन्होंने जनता को प्रेरित किया और उसका मनोबल बढ़ाया। कस्तूरबा ने समाज के पूर्वाग्रह को तोड़ा कि महिलाएं कमजोर हैं, अबला हैं और एक ही समय में दो कार्यों को नहीं कर सकती हैं लेकिन उन्होंने अपनी जीवन यह उदाहरण प्रस्तुत किया कि महिलाएं एक समय में एक से अधिक कार्य बखूबी कर सकती हैं और वह आज महिलाओं की प्रेरणा स्रोत भी है।

Kasturba Gandhi was initially a simple woman and her whole life changed after her Satyagraha in South Africa. From here he started working in public life and this process continued till his death. She was illiterate, yet she was full of basic understanding and hard work. She walked shoulder to shoulder with Gandhiji. Kasturba was instrumental in converting Mohandas into Gandhi. At the same time he played the responsibility of family and on the other hand he also contributed his best in public life. Apart from this, women education, women empowerment, upliftment of tribals and made full contribution in the independence of the country. At the same time he played the responsibility of family and on the other hand he also contributed his best in public life. Apart from this, women education, women empowerment, upliftment of tribals and made full contribution in the independence of the country.

मुख्य शब्द : महिला शिक्षा, बालिका शिक्षा, स्वतंत्रता आन्दोलन, महिला सशक्तिकरण, आदिवासी उत्थान, अनुशासन, चंपारण सत्याग्रह, वीरांगना, सार्वजनिक जीवन, आत्मबलिदानी, संघर्षशील, सहनशील।

प्रस्तावना

कस्तूरबा गांधी काजल का जन्म 11 अप्रैल 1869 में काठियावाड़ के पोरबंदर नगर में हुआ था। अपने पिता गोकुलदास माकन जी की तीसरी संतान थी प् उस समय ज्यादातर लोग अपनी बेटियों को नहीं पढ़ाते थे और विवाह भी छोटी उम्र में कर देते थे। अतः कस्तूरबा भी निरक्षर थी और विवाह भी मात्र 13 साल की उम्र में मोहनदास से हो गया था। उनका आरंभिक जीवन कठिनाइयों से पूर्ण रहा उनके पति मोहनदास उनकी निरक्षरता से अप्रसन्न रहते थे और

उन्हें ताने भी मारते थे। उन्हें कस्तूरबा का सजना, संवरना तथा घर से बाहर निकलना बिल्कुल पसंद नहीं था। शुरू से ही ष्बाष् पर अंकुश लगाने का प्रयत्न किया लेकिन बा ने उनकी बात नहीं मानी। वे शक्की और ईर्ष्यालु पति थे। इस बात को उन्होंने भी स्वीकार किया। विवाह के कुछ समय तक वे साथ रहे लेकिन बाद में मोहनदास के इंग्लैंड चले जाने के बाद वे अकेली रही और अपने पुत्र हरिलाल का अकेले ही पालन पोषण किया। 1896 मे जब मोहनदास अफ्रीका चले गए तो अपने साथ कस्तूरबा को भी लेकर गए। अफ्रीका से लेकर अंतिम समय तक ष्बाष् हर कठिनाई में उनके साथ रही।

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन का उद्देश्य कस्तूरबा गांधी ने महिला शिक्षा और बालिका शिक्षा के लिए किए गए कार्यों का मूल्यांकन करना है। महिलाओं को साक्षर बनाने के साथ. साथ सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य करने के लिए मनोबल बढ़ाने के लिए कस्तूरबा गांधी के योगदान का अध्धयन करना है। कस्तूरबा गांधी भारत की आजादी में महिलाओं को जोड़ने में कितनी कामयाब रही। किस प्रकार उन्होंने महिलाओं को एक समय में घर के प्रति कार्यों की जिम्मेदारी के साथ साथ घर से बाहर निकल कर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। क्या कस्तूरबा गांधी महिलाओं में यह समझ विकसित कर पाई कि महिलाएं किसी भी प्रकार से पुरुषों से शारीरिक व मानसिक क्षमता में कम नहीं है। इस अध्ययन के द्वारा कस्तूरबा गांधी इस योगदान का अध्ययन किया गया कि महिलाएं केवल घर की चारदीवारी में ही रहने लायक हैं या आजादी के आन्दोलन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है प् क्या देश की आजादी एवं उसकी उन्नति महिलाओं के बिना अधूरी है। उनके द्वारा आदिवासियों के कल्याण के लिए किए गए कार्यों का मूल्यांकन करना भी हैi~उनके द्वारा आदिवासियों के कल्याण के लिए किए गए कार्यों के द्वारा उन्हें समाज की मुख्यधारा से जुड़ने के प्रयासों का अध्ययन करना हैप् विवाह के बाद भी अगर उन्हें अपने व्यक्तित्व का विकास करना हो तथा समाज को आगे बढ़ाने में अपना योगदान देना हो तो कस्तूरबा गांधी एक उदाहरण है। अगर महिलाएं सही सोच रखती हैंए आत्मविश्वास से परिपूर्ण हैए दृढ़ निश्चय हैं, कर्मठ हैं, तो वे परिवार के विरोध को भी सहन कर तथा उस विरोध को सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर समाज व देश के उत्थान में योगदान दे सकती है।

परिकल्पना

यह अध्ययन इस परिकल्पना पर आधारित है कि:

1. कस्तूरबा गांधी का स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में योगदान नगण्य रहा है।
2. कस्तूरबा गांधी का महिला सशक्तिकरण में योगदान नगण्य रहा है।
3. कस्तूरबा गांधी का आदिवासी कल्याण में योगदान नगण्य रहा है।

साहित्य की समीक्षा

वर्ष 2017 मे चंद्रप्रकाश द्वारा लिखित पुस्तक 'दा सीक्रेट डायरी आफ कस्तूरबा'k~ 1 में लिखा गया है कि गांधीजी ष्बाष् के कारण ही महान बने। अनेक जन सभाओं में विशाल जन समूह द्वारा कस्तूरबा की जय का नारा भी लगाते हुए देखा गया। वर्ष 2007 में महेश शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक ध् जीवनी श्कस्तूरबा गांधीश् 2 के अनुसार स्वयं गांधीजी इस बात को स्वीकार करते हैं कि ष्जो मेरे और बा के निकट संपर्क में आए हैं उनमें अधिक संख्या तो ऐसे लोगों की है जो मेरी अपेक्षा बा पर अनेक गुना अधिक श्रद्धा रखते हैं"। वर्ष 2018 में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित एवं अरविंद मोहन द्वारा लिखित पुस्तक '150 बा.बापू'k~ 3 में कहा गया है कि हिंदुस्तान की आजादी की लड़ाई में कस्तूरबा का महत्वपूर्ण योगदान है। वर्ष 2017 में नीलिमा डालमिया द्वारा लिखित पुस्तक 'कस्तूरबा की रहस्यमयी डायरीश् 4में कहा गया है कि कस्तूरबा एक कमरे से निकलकर जेल गई तथा पितृसत्तात्मक धारणा को तोड़कर उम्दा समाजसेविका तथा देशभक्त बनी। वर्ष 2020 में बी एम भल्ला द्वारा प्रकाशित पुस्तक श्कस्तूरबा गांधी रूए बायोग्राफीश् 5 में कस्तूरबा गांधी के जीवन का चित्रण किया गया प् इस पुस्तक में यह बताया गया कि किस प्रकार कस्तूरबा गांधी स्वतंत्रता संग्राम में आईप् कस्तूरबा गांधी ने भारतीय महिलाओं की पहचान बनानेए समानता तथा आत्म .सशक्तिकरण को विकसित करने में योगदान दिया ।

विश्लेषण एवं निष्कर्ष

अफ्रीका में गांधीजी की तरह ही कस्तूरबा ने अपने जीवन को सादा बना लिया। अफ्रीका से ही कस्तूरबा ने भी सार्वजनिक जीवन में कार्य करना शुरू हो गया। यह किस्सा कस्तूरबा की जटिलता और संस्कारों का परिचायक है। जब दक्षिणी अफ्रीका में भारतीयों की दयनीय स्थिति के खिलाफ प्रदर्शन आयोजित करने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया तथा 3 महीने कैद की सजा सुनाई गई। वस्तुतः दक्षिण अफ्रीका में 1913 में ऐसा कानून पास हुआ जिसके अनुसार ईसाई मत के अनुसार किए गए ही विवाह विभाग के अधिकारी के यहां दर्ज किए गए और इसके अतिरिक्त अन्य विवाह की मान्यता रद्द कर दी गई।श् गांधी जी ने इस कानून को रद्द कराने का बहुत प्रयास किया लेकिन वे सफल नहीं हो पाए तो उन्होंने सत्याग्रह करने का निश्चय किया प् उन्होंने इस आन्दोलन में स्त्रियों को भी सम्मिलित करने का आवाहन किया लेकिन उन्होंने ष्बाष् से इस बात पर चर्चा नहीं की। वे नहीं चाहते थे कि वे सत्याग्रहियों में जाये व कठिनाई में पड़कर विषम परिस्थिति का सामना करें। "बाष् से नहीं पूछे जाने के कारण वह बहुत दुखी हुई लेकिन फिर भी स्वेच्छा से सत्याग्रह में शामिल हुई और तीन अन्य महिलाओं के साथ जेल गई। जेल में जो भोजन मिला वह अखाद्य था अतः उन्होंने फलाहार करने का निश्चय किया लेकिन उनके इस अनुरोध पर जेल प्रशासन ने कोई ध्यान नहीं दिया तो उन्होंने उपवास करना प्रारंभ कर दिया अंततः पांचवें दिन अधिकारियों को झुकना पड़ा। उन्हें फल दिए गए लेकिन वे काफी कम मात्रा में थे इस कारण वे आधे समय भूखी रहती थी। जब जेल से छूटे तो उनका शरीर एक ढांचा मात्र रह गया था पर उनके हौसले में कोई कमी नहीं थीश्6यहीं से कस्तूरबा का जीवन परिवर्तित हो गया प् उन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र में होने वाले अन्याय पर बोलना और कार्य

करना शुरू कर दिया था और गांधी जी के हर कदम और हर संघर्ष में साथ देना शुरू कर दिया। 1915 में जब गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से लौटे तो उन्हें नई कस्तूरबा से परिचय हुआ और गांधी के स्वतंत्रता संग्राम में वह सहगामी बनी प्कस्तूरबा गांधी धर्म परायण महिला थी और जीवन साथी की परिभाषा को पूर्णत: सार्थक बनाते हुए जिंदगी के हर मोड़ पर उन्होंने बापू का साथ निभाया। यदि आत्म बलिदानी, संघर्षशील और सहनशील जैसे व्यक्तित्व की धनी "बाष् उनके साथ नहीं होती तो गांधीजी अहिंसक कार्य एवं प्रयास में इतने सार्थक नहीं होते। उन्होंने गांधीजी के सभी कार्यों को और अधिक प्रभावशाली बनाने में योगदान दिया। चाहे उनके कुछ विचारों में असहमति भी रही होएफिर भी एक भारतीय आदर्श पत्नी की तरह जीवनसंगिनी के रूप में कस्तूरबा हमेशा अपने पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती रही। । जब 1906 में गांधी जी ने ब्रह्मचर्य का व्रत रखा तो भी कस्तूरबा ने इसका विरोध नहीं किया ।~ कस्तूरबा ने एक साथ अपने दोनों कर्तव्यों का पालन किया प् एक तरफ अपने परिवार का पूरा ध्यान रखा और दूसरी तरफ अपने राष्ट्रीय के प्रति कर्तव्य का पालन किया। 1915 में कस्तूरबा भी गांधी के साथ भारत लौट आई और हर कदम पर उनका साथ दिया कई बार जब गांधीजी जेल गए तब उन्होंने उनका स्थान लिया और जनता का मनोबल कम नहीं होने दिया। चंपारण सत्याग्रह के दौरान ष्बाष् उनके साथ वहां गई और लोगों को सफाई, अनुशासन पढ़ाई आदि के महत्व के बारे में बताया। वहां घूम घूम कर लोगों को दवा वितरित करती रही। 22 मार्च से 5 जून 1918 खेड़ा सत्याग्रह के दौरान भी कस्तूरबा घूम घूम कर स्त्रियों का मनोबल बढ़ाती रही तथा उनका उत्साहवर्धन करती रही। 1922 में जब गांधीजी गिरफ्तार हो गए तो उन्होंने एक वीरांगना जैसा परिचय दिया और उन्होंने इस गिरफ्तारी के विरोध में विदेशी कपड़ों का परित्याग करने का आवाहन किया। उन्होंने गांधीजी का संदेश प्रसारित करने के लिए स्वयं गुजरात के गांवों का दौरा भी किया। '1930 में दांडी यात्रा के बाद जब बापू जेल चले गए तब "बाष् ने उनका स्थान लिया और लोगों का मनोबल बढ़ाती रही। क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण 1932 व 1933 में उनका अधिकांश समय जेल में ही बीता'। 7 जो अंग्रेज महात्मा गांधी को डराते थेए वे खुद कस्तूरबा गांधी से ऊंची आवाज में बात नहीं करते थे। कस्तूरबा कड़क स्वभाव की थी। बच्चों की पढ़ाई प्रति भी ष्बाष् पूरी तरह समर्पित थी। एक बार ष्बाष् की अनुपस्थिति मे अंग्रेजों ने उनकी झोपड़ी जलवा दी। ष्बाष् की उस झोपड़ी में बच्चे पढ़ते थे उन्हें अपनी यह पाठशाला 1 दिन के लिए बंद करना भी उन्हें पसंद नहीं था। अतः उन्होंने सारी रात जागकर घास का एक दूसरा झोपड़ा बना दिया इससे पता चलता है कि वह अपने कार्य के प्रति कितनी दृढ़ निश्चय और संघर्षशील थी ।~ '1932 में हरिजनों के प्रश्न को लेकर बापू को यरवदा जेल में आमरण उपवास शुरू कर दिया था उस समय बा साबरमती जेल में थी। उस समय भी बहुत बेचौन हो उठी और उन्हें तभी चौन मिला जब वे यरवदा जेल भेजी गई'।[8]

कस्तूरबा गांधी जी अपने पति महात्मा गांधी जी को अपना आदर्श मानती थी और वे उनसे इतना अधिक प्रभावित थी कि बाद में उन्होंने भी अपने जीवन को गांधी जी की तरह बिल्कुल साधारण बना लिया था। यह तो हम सभी जानते हैं कि कोई भी काम पहले गांधीजी खुद करते थे और इसके बाद वे किसी ओर से करने के लिए कहते थे प् इस प्रभाव के कारण कस्तूरबा गांधी जी प्रसन्न रहती थी और उनसे सीखते भी थी इससे जुड़ा हुआ एक दिलचस्प किस्सा है. 'दरअसल जब कस्तूरबा बीमार रहने लगी थी तब गांधीजी ने उन्हें नमक छोड़ने के लिए कहा। इस बात को लेकर कस्तूरबा ने यह कहा कि बिना नमक के खाना बड़ा ही बेस्वाद लगता है अतः वह नमक नहीं छोड़ सकती है लेकिन फिर गांधी जी ने खुद नमक खाना छोड़ दिया तो वे इस बात से कस्तूरबा काफी प्रभावित हुई और उन्होंने भी नमक छोड़ दिया ।इस प्रकार गांधी जी उनके प्रेरणास्रोत बने'। [9]

जिस तरह बा गांधी जी से प्रभावित थी उसी प्रकार बापू भी कस्तूरबा की कई बातों के मुरीद थे ।~ उनकी क्षमताओं और देशभक्ति की भावनाओं को गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में ही पहचान लिया था। कस्तूरबा गांधीजी के सभी कामों में हाथ बटाती थी और गांधी जी के आश्रम की देखभाल भी करती थी ।~ कस्तूरबा सत्यग्रहियों की सेवा भी पूरे मनोयोग से करती। इसी वजह से उन्हें लोग ष्बाष् कहकर पुकारते थे ।भारत छोड़ो आंदोलन के समय बापू समेत कांग्रेस के सभी शीर्ष नेताओं को 9 अगस्त 1942 को गिरफ्तार कर लिया। इसके पश्चात ष्बाष् ने शिवाजी पार्कए मुंबई में; जहां स्वयं गांधी जी भाषण देने वाले थे द्धसभा में भाषण देने का निश्चय किया परंतु पार्क के द्वार पर ही अंग्रेजी सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया तथा 2 दिन बाद ही पुणे के आगा के महल में भेज दी गई प्उस समय ष्बाष् अस्वस्थ हो गई थी प् 15 अगस्त को यकायक गांधी जी के निजी सचिव महादेव देसाई की मृत्यु हो गई तो वह बहुत दुखी हुई ¡ कस्तूरबा की देश को आजाद देखने की दिली इच्छा थी पर उनकी गिरफ्तारी के बाद उनका स्वास्थ्य बिगड़ता ही गया और कभी उसमें संतोषजनक सुधार नहीं हुआ प् जनवरी 1944 में उन्हें दो बार दिल का दौरा पड़ा प्उनके निवेदन पर सरकार ने आयुर्वेद के डॉक्टर का प्रबंध भी कर दिया गया और उन्हें कुछ समय के लिए थोड़ा आराम भी मिला पर 22 फरवरी 1944 को उन्हें एक बार फिर भयंकर दिल का दौरा पड़ा और वह हमेशा के लिए दुनिया छोड़ कर चली गई ।

कस्तूरबा महिलाओं के लिए रोल मॉडल थी ।~ गांधीजी जैसे.जैसे राजनीति और देश के लिए अत्यधिक समर्पित होते गएए इस दौरान कस्तूरबा एक स्तंभ की तरह गांधी जी के साथ खड़ी रही और उन्हें समर्पित किया प् उस समय कस्तूरबा गांधी के अतिरिक्त केवल कुछ महिलाएं राजनीति व सेवा में संलग्न थी जिन्हें उंगलियों पर गिने जा सकता था प्उस समय समाज में यह सोच विद्यमान थी कि महिलाएं यह सब कार्य करेंगी तो घरेलू कार्य को ठीक प्रकार से नहीं कर पाएंगी या बीच में ही छोड़ देंगी प् कहीं ना कहीं महिलाओं के मन में भी यह बात घर कर गई थी लेकिन महात्मा गांधी जी

देश की महिलाओं को आजादी की लड़ाई में जोड़ने का महत्व जानते थे अतः उन्होंने कस्तूरबा को एक रोल मॉडल के रूप में पेश किया जिससे महिलाएं यह समझ सके कि घर चलाना और देश के लिए लड़ना एक साथ किया जा सकता है i~ कस्तूरबा गांधी ने बहुत सी महिलाओं को प्रेरित किया और आंदोलन को नया आयाम दिया। हम यह समझ सकते हैं कि उस समय समाज में महिलाओं की शक्ति के बारे में कई पूर्वाग्रह बना रखे थे जैसे कि महिलाएं एक साथ दोहरी जिम्मेदारी नहीं संभाल सकती हैं, महिलाएं शारीरिक दृष्टि से कमजोर होती हैं, महिलाएं उस समय अनपढ़ थी, उनमें आधारभूत समझदारी नहीं होती है, महिलाएं देश के स्थान पर परिवार को अधिक अधिक महत्व देती है, कठोर निर्णय लेने की क्षमता से विहीन होती है लेकिन यह सही नहीं है ।कस्तूरबा ने देश की आजादी में गांधीजी की सह. गामिनी के रूप में अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया i~ प्रारंभ से लेकर मृत्यु तक सदैव उनके साथ रही । उन्होंने समाज में महिलाओं की स्थिति को सम्मानजनक स्थान दिलाने में योगदान दिया i~ उनके कार्यों से समाज में यह भ्रम भी दूर हो गया कि महिलाएं केवल घर परिवार ही संभाल सकती हैं। राष्ट्र सेवाए सामाजिक कार्यों एवं राजनीति में हिस्सा लेकर देश को आगे बढ़ाने में योगदान भी दे सकती हैं i~ इस प्रकार कस्तूरबा गांधी का योगदान किसी भी कीमत पर गांधीजी से कम नहीं हैप् स्वतंत्रता आन्दोलन के शहीदों में उनका नाम स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा ।

निष्कर्ष

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकला जा सकता है कि कस्तूरबा गांधी का स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है प् उन्होंने महिला शिक्षाए बालिका शिक्षाए महिला सशक्तिकरण एवं आदिवासी कल्याण के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया i~ दोहरे उत्तरदायित्वों को निभाते हुए उनके द्वारा किये गए कार्य आज की महिलाओं के लिए आदर्श प्रस्तुत करते हैं ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *चन्द्र प्रकाश,दी सीक्रेट डायरी ऑफ कस्तूरबा ;हिंदी संस्करण), अगस्त 2017*
2. *महेश शर्मा, कस्तूरबा गांधी,www.pustak.org,2007*
3. *अरविन्द मोहन,150 बा.बापू एनेशनल बुक ट्रस्टए 2018*
4. *Neelima Dalmiya Adhar, The Secret Diary of Kastoorba, Westland Ltd., 2017*
5. *B M Bhalla, Kastoorba Gandhi: A Biography, Lotus Collection, Roll Books, 2020*
6. *https:/www.itshindi.com/kastoorba-gandhi.him*
7. *http:f//ree-stock illustration.com/kastoorba*
8. *शब्द –शिखर,रविवार,11 अप्रैल 2010*
9. *gyanipandit.com*